तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः ।

हेम्नः संलक्ष्यते अग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा ।।10।।

अन्वय तं सदसद्व्यक्तिहेतवः सन्तः श्रोतुमर्हन्ति हि हेम्नः विशुद्धि श्यामिका अपि वा अग्नौ संलक्ष्यते।

अनुवाद (मेरे द्वारा लिखा जाने वाले) इस रघुवंश महाकाव्य को भले बुरा की पहचान कर सकने वाले सज्जन ही सुन सकते है क्योंकि सोने की शुद्धता अथवा मलीनता (खरा अथवा खटा होना) की परीक्षा उसे अग्नि में (डालने) से हो ही सकती है।

टिप्पणियां

सद्सद्- सत् च असत् च सदसती (द्वन्द), सदसतोः व्यक्ति इति सदसद्व्यक्तिः (षष्ठी तत्पुरुष), सदसद्व्यक्तेः हेतवः इति सदसद्व्यक्तिहेतवः। सज्जन और विद्वान व्यक्ति ही अच्छे और बुरे, शुद्ध और अशुद्ध में भेद करने में समर्थ हैं। ऐसे पारखी ही मेरे काव्य की परीक्षा कर सकते हैं। देखिये- **''आपरितोषाद्विदुषां न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम्''** (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)।

हेम्नः हेमन्, षष्ठी एक वचन।

श्यामिका खोट, मिलावट। सोने में पीतल या लोहा जैसी हल्की और सस्ती धातु का मिश्रण। भाव यह है कि जैसे सोने के पारखी जौहरी ही खरे और खोटे सोने में भेदकर उसकी परीक्षा करने में समर्थ होते हैं वैसे ही महाकाव्य के गुण दोष की परख करने वाले विद्वान् ही मेरे महाकाव्य रघुवंश के गुण-दोष की परीक्षा कर इसकी प्रशंसा या निन्दा कर सकते हैं। वे ही इसके सुनने के अधिकारी है।

संलक्ष्यते- सम् उपसर्ग, धातु लक्ष्, कर्मणि लट्। जांची जाती है, परीक्षा की जाती है।